आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 05.08.2016) ■ अंक-607 ■ तारीख- 06 अगस्त 2016, श्रावण शुक्ल पक्ष -4 ■ शनिवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

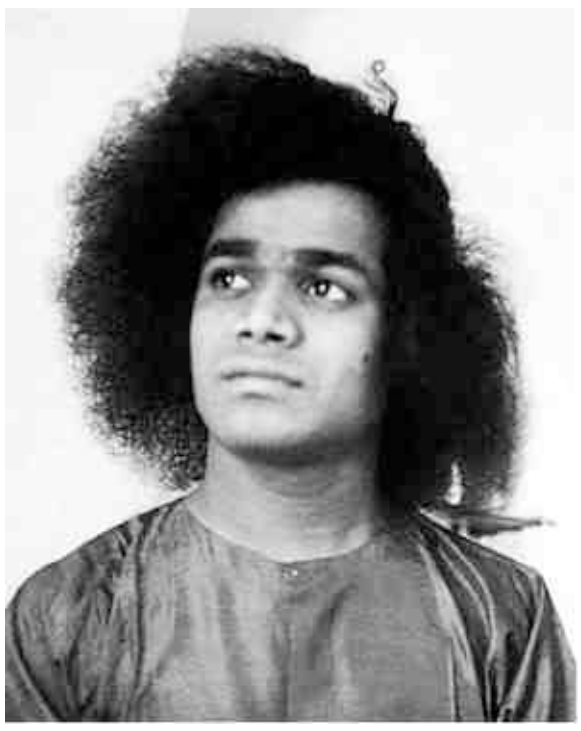

हृदय के दोष को नैतिक जीवन जीकर भी दूर किया जा सकता है, यही मनुष्य का कर्तव्य है। एक समय आता है जब आप थक या कमजोर पड़ जाते हैं, तब आपको प्रार्थना करना चाहिए।

- भ्रम -

इस भ्रम का परित्याग करो कि तुम बूढ़े या रोगी हो गए हो या तुम कमजोर एवं दुर्बल हो गए हो। कुछ लोग वर्षों की गणना करते हैं, बढ़ती हुई आयु पर शोक करने लगते हैं तथा मृत्यु से भयभीत कायरों की भांति कम्पित होते हैं। किन्तु स्मरण रखो कि ही स्वर्ग है एवं विषाद ही नर्क है। सदैव कुछ काम करने के लिए रहे तथा इसे इतनी उत्तमता से करो कि तुम्हें इससे आनन्द प्राप्त हो।

&lR; lkbZ ckck

नीति के श्लोक

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात।
स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।।

vFkZ अपना काम ही अच्छा है, चाहे उसमें कमियां भी हों, किसी और के अच्छी तरह किए काम से अपने काम में मृत्यु भी होना अच्छा है, किसी और के काम से चाहे उसमें डर न हो...

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

vFkZ क्योंकि जो एक श्रेष्ठ पुरुष करता है, दूसरे लोग भी वही करते हैं... वह जो करता है, उसी को प्रमाण मानकर अन्य लोग भी पीछे वही करते हैं।

गुरू महिमा

1. तीनों लोकों के देव–असुर एवं नाग आदि सभी इस सत्य को बड़ी स्पष्ट रीति से बताते हैं कि ब्रह्म विद्या गुरुमुख में ही स्थित है। गुरुभक्ति से ही इसे प्राप्त किया जा सकता है।
2. 'गुरू' शब्द में 'गु' अक्षर अन्धकार का वाचक है और 'रू' का अर्थ है प्रकाश। इस तरह गुरू ही अज्ञान का नाश करने वाले ब्रह्म है। इसमें तनिक भी संशय नहीं है।
3. शास्त्र वचनों से यह प्रमाणित होता है कि 'गुरू' शब्द के प्रथम वर्ण 'गु' से माया आदि गुण प्रकट होते हैं और इसके द्वितीय वर्ण 'रू' से ब्रह्म प्रकाशित होता है। जो माया की भ्रान्ति को विनष्ट करता है।
4. इसलिए गुरुपद सर्वश्रेष्ठ है। यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। गण और गन्धर्व आदि भी इसकी पूजा करते हैं।
5. हे श्रेष्ठमुख वाली देवी पार्वती! शिष्य को यह सत्य भली भाँति जान लेना चाहिए कि यह ध्रुव (अटल) है कि गुरु से श्रेष्ठ अन्य कोई भी तत्व नहीं है। ऐसे लोक कल्याण में निरत परम कृपालु गुरु के कार्य के लिए आसन, वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि देते रहना शिष्य का कर्त्तव्य है। साधक द्वारा इस तरह लोक कल्याणकारी कार्यों में सहयोग से सद्गुरू को सन्तोष होता है। भगवान् शिव का कथन है कि गुरू के कार्य के लिए साधक को अपनी जीविका को भी अर्पण करना चाहिए। हर काल में कर्म से, मन से तथा वाणी से गुरू की आराधना करनी चाहिए। श्रीगुरू के समीप लज्जा को त्यागकर साष्टांग प्रणाम करना चाहिए।

एंटीबॉयोटिक लेने से पहले जाने पी.एम. मोदी की ये बात

मानसून का सीजन अपने साथ सुहाना मौसम तो लाता है लेकिन इसी के साथ आती हैं ढेरो बीमारियां भी. अगर इस मौसम में थोड़ी सी भी लापरवाही हो गई तो ये बीमारी आपकी समस्या को और बढ़ा सकती है.

इस बात को ध्यान में रखते हुए मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में फिटनेस की इन्हीं कुछ बातों का जिक्र किया है. हल्की–फुल्की बीमारी में कोई भी दवा लेने से कैसे बचें और मौसमी बुखार से बचने के लिए क्या उपाय अपनाएँ आइए जानें

1. बीमार पड़ने पर बिना डॉक्टर की सलाह के कोई भी दवाई लेने से बचें.
2. एंटीबॉयोटिक दवाइयों के सेवन से परहेज करें और इसके साइड इफेक्टस के बारे में जरूर जान लें.
3. जब भी डॉक्टर आपको बीमारी का कोर्स बताएँ और दवाएं दें तो उस कोर्स को कभी भी बीच में न छोड़े. ऐसा करने से उस बीमारी के दोबारा होने की संभावना बनी रहती है.
4. बीमार पड़ने पर हल्का और सादा खाना खाएँ इसके साथ ही उबला और साफ पानी पिएँ.
5. अपने घर और खुद की सफाई का पूरा ख्याल रखें और आस–पड़ोस के लोगों को भी इसके लिए जागरूक करें।

तीनों लोकों से भी ऊपर गोओं का लोक-गौलोक

पूर्वकाल में सत्ययुग में जब देवी अदिति ने पुत्र–प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की थी और जब तपस्या से संतुष्ट होकर स्वयं विष्णु भगवान ही उनके पुत्र रूप में अवतरित होने वाले थे, उन्हीं दिनों प्रजापति दक्ष की धर्मपरायण पुत्री देवी सुरभी ने भी घोर तपस्या प्रारंभ की कैलाश के रमणीय शिखर पर सुरभी ग्यारह हजार वर्षों तक एक पैर पर ही खड़ी रही। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवगणों के साथ ब्रह्मा सुरभी देवी के पास गए और उनसे बोले –'देवि ! मैं तुम्हारी तपस्या से संतुष्ट हूँ। अपनी इच्छानुसार कोई वर मांग लो।' सुरभी ने उत्तर देते हुए कहा –'भगवान् ! मुझे वर मांगने की कोई कामना नहीं है। आप मुझ पर प्रसन्न हैं–यही मेरे लिए सबसे बड़ा वर है।'

इस पर ब्रह्मा ने सुरभी से कहा–'देवि! तुमने लोभ और कामना को त्याग दिया है। तुम्हारी इस निष्काम तपस्या से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अत: तुम्हें अमरत्व का वर प्रदान करता हूं। तुम मेरी कृपा से तीनों लोकों के ऊपर निवास करोगी। तुम्हारा वह धाम गौलोक नाम से विख्यात होगा !'

तीनों लोकों के ऊपर गौलोक है, जो परमात्मा के समान नित्य है। उसकी लंबाई चौड़ाई तीन करोड़ योजन है। वह मंडलाकार फैला हुआ है। वह महान् तेज स्वरूप है तथा वहां की भूमि परम रत्नमयी है। प्रलयकाल में वहाँ केवल श्री कृष्ण रहते हैं और सृष्टिकाल में वह गोप–गोपियों से भरा रहता है। गौलोक से नीचे पचास करोड़ योजन दूर दक्षिण भाग में वैकुंठलोक है और वाम भाग में शिवलोक है।

कान आवाज कैसे सुनते है?

प्रतिदिन हम बहुत सी आवाजें सुनते हैं। इनमें से कुछ अच्छी लगती हैं। तो कुछ अच्छी नहीं लगती हैं। क्या तुम जानते हो कि हमारे कान भिन्न–भिन्न प्रकार की आवाजें कैसे सुनते हैं? ध्वनि सुनने का काम हमारे कान करते हैं। बनावट के आधार पर कान को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। बाह्य कान, मध्य कान और आंतरिक कान। जब किसी वस्तु से ध्वनि पैदा होती है, तब सबसे पहले वह वस्तु कंपन करना शुरू करती है। इन कंपनों के कारण ही ध्वनि तरंगें पैदा होती हैं। ये ध्वनि तरंगें माध्यम से होती हुई हमारे कान तक पहुँचती हैं। बाहरी कान की बनावट कुछ ऐसी है कि यह अधिक से अधिक ध्वनि तरंगों को प्राप्त कर सकता है। वस्तु से आने वाली ध्वनि तरंगें बाह्य कान में प्रवेश करके एक नली द्वारा कान के अंदर जाती हैं। मध्य कान में एक पर्दा होता है, जो इन तरंगों के टकराने से कंपन करने लगता है। मध्य कान में इस पर्दे के ठीक पीछे तीन छोटी–छोटी हड्डियां हैं, जिन्हें हैमर एनविल और स्टिरप कहते हैं। पर्दे के कंपन करने के फलस्वरूप ये तीनों हड्डियां भी कंपन करने लगती हैं। इस प्रकार ये तीनों हड्डियां इन कंपनों को कॉक्लिया तक पहुँचा देती हैं। काक्लिया आंतरिक काम का एक हिस्सा है, जो स्प्रिंग की भांति बना होता है। इस भाग के चारों ओर एक द्रव पदार्थ होता है। इसी द्रव के अंदर नाड़ियों के सिरे होते हैं। काक्लिया के कंपनों के कारण यह तरल पदार्थ भी कंपन करने लगता है। इन कंपनों से नाड़ियों के सिरे उत्तेजित हो जाते हैं। इस उत्तेजना से पैदा हुए आवेश सुनने वाली नाड़ी द्वारा मस्तिष्क में चले जाते हैं और हमें ध्वनि सुनाई दे जाती है। हमारे कान मंद से मंद और तेज से तेज ध्वनियों को सुनने के प्रति संवेदनशील होते हैं। हम इनसे 20 हर्ट्ज से लेकर 20 हजार हर्ट्ज तक की आवृत्ति वाली ध्वनियाँ सुन सकते हैं। कानों को समय–समय पर उनकी सफाई करते रहना निरोग रखने के लिए आवश्यक है। कान में एक

सुविचार

सिर्फ असाधारण अवसरों की राह नहीं देखनी चाहिए। छोटे–से–छोटे अवसर का उपयोग किया जाए तो बड़े अवसर सामने आकर स्वयं खड़े हो जाते है। &LokeH ekMu

काम करने से पहले सोचना बुद्धिमानी, काम करते हुए सोचना सतर्कता और काम करने के बाद सोचना मूर्खता है। &n;kun ljLorh

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

❖ लोभ-लालच ❖

क्या है? धन... कौन? निर्धन ...

किसको ढूँढ रहे हो, अरबोंपति चले गये व्याकुल हो करके। सोने–चाँदी की ईंटें जिनके घर में थी, वो खुद के रोटी बनाने के लिए आटा तौलते थे, एक पैसा किसी को देते नहीं थे। कंजूसी रूपी दुर्गुण, ये मानव धर्म के शत्रु हैं, कठोरता, मक्खीचूसी। धन को बस समेट रहे हैं, सात तिजोरी हो गई, आठ तिजोरी हो गई, दो करोड़ हो गया, पचास करोड़ हो गया। दुनिया के 234 लोगों में मेरा नाम कब आयेगा, भारत का सबसे अमीर व्यक्ति कब बनूँगा, विश्व का सबसे धनपति मैं कब बनूँगा। अरे ये लालच क्या करोगे, आपके मन की शान्ति कहाँ खो गई? आपकी रात्रि की नीन्द कहाँ चली गई? लाखों रूपये के बिस्तर भी आपको नीन्द नहीं आने देते हैं क्योंकि धन में ही यदि सब कुछ होता तो करोड़पति तो निहाल हो जाते। एक करोड़पति ने एक अच्छे सेवा भावी संत पर गुस्सा किया। हे नारायण लाल, मैंने शंकर भगवान की पूजा की हीरे और रत्नों से और तुमने बिल्वपत्रों से, मेरे हीरे–पन्नों को ढक दिया। साधु संत ने कहा–सेठ जी, केवल हीरे – पन्नों से भगवान राजी नहीं होता। भगवान के पास हीरे–पन्नों की कमी है क्या?उससे ज्यादा वैभव किसके पास होगा? लक्ष्मी जी जिनके चरण दबाती हैं, उन नारायण प्रभु को क्या हीरे – पन्ने से खुश कर पाओगे? करोड़पति ने कहा – मैं पहले भगवान का दर्शन करूँगा। उस नारायण भगवान के सेवक ने कहा – मैं तो भगवान को रोज देखता हूँ इन दीन–दुखियों में, इन दिव्यांगों में, इन उदास चेहरों में, इन प्रज्ञाचक्षु में, इन मूक बधिरों में, इन हड्डी के रोगियों में। इन जन्मजात विकलांगों में मैं भगवान का रोज दर्शन करता हूँ। भगवान पहले संत को मिले, भगवान पहले समाज सेवियों को मिले, करोड़पति तो बहुत दूर रह गये महाराज। बोलिए सरस्वती माता की जय।

सरिता में पानी बहता है, आगे ही बढ़ता जाता।
अपनी ही मंजिल पाने को, बहता है कलकल करता।
हम उस जल में डुबकी मारे, और निकल बाहर आये।
हम सोचे फिर उसी नीर में, हम डुबकी मारे नहाए।।

आपके लिए अमृत जल भरा हुआ है–बाबूड़ा। आओ तो सही, रामचरितमानस की कृपा के सरोवर में पधारो, ये रास्ता आपको सेवा की तरफ ले जायेगा, ये पथ आपको आनन्द की तरफ ले जायेगा – बाबू। इसी जीवन में परमान्द को प्राप्त करने के लिए मानव धर्म पर चलना है अपने को और जब इस सप्त सरोवर में जा रहे हैं। ये प्रेम की सीढ़ी, ये स्नेह की सीढ़ी ये बहना के नेह की सीढ़ी, ये भाई की ताकत व शक्ति की सीढ़ी, ये पिता के कर्त्तव्य बोध की सीढ़ी, ये माता के वात्सल्य की सीढ़ी, ये पुत्र की भक्ति की सीढ़ी। आईये बाबु मानव धर्म के नारे लगावें। मानव धर्म की जय, प्रेम की जय, शान्ति देवता की जय। यूँ लगा कि 75 हजार करोड़ कोशिकाएँ नृत्य करने लग गई, – मन मयूर नाच उठा।

❖ सेवक का नाम ❖

जय हनुमान... सकल गुण निधान

सीता माता की जय–जयकार करेंगे, हनुमानजी को प्रणाम करेंगे, बोलिए सीता माता की जय, पवनपुत्र हनुमान की जय।

vtj vej xq.k fuf/k lqr gksb ------------

अजर अमर गुण निधि सुत होय, हनुमानजी ने जब सीताजी को प्रणाम किया रामचरितमानस में 'पूँछ बुझाई खोई श्रम' लंका को जला डाला। एक विभीषण कर गृह नाहीं। अशोक वन और विभीषण के घर को छोड़कर पूरी लंका धधक–धधक कर जल रही है और हनुमानजी दण्डवत कर रहे हैं माता सीता को।

मातु मोहि दीजे कुछ चीन्हा, जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा।
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ, हर्ष समेत पवनसुत लयऊ।।

क्रमश: अगले अंक में...

सम्पादकीय

चक्रवर्ती सम्राट को पुण्योपार्जन का शौक कुछ ऐसा लगा कि प्रजा से पुण्य खरीदने लगे! ऐसी तराजू बनाई गई जिसमें किसी के पुण्यों के लेखों का कागज एक पलड़े में रखते ही दूसरे पलड़े में उसके बराबर स्वर्ण मुद्राएँ तुल जाती!

विधि ने अपना काम किया, पड़ौस के राजा ने आक्रमण किया, परिणाम में हार मिली चक्रवर्ती सम्राट को! रानी, पुत्र सहित उन्हें रात्रि के अंधेरे में भागना पड़ा! पर, खाने को कुछ नहीं था– साथ! पड़ौसी राज्य में जाकर कुछ मेहनत की, जिससे एक समय की भोजन सामग्री नसीब हुई। रानी भोजन बना ही रही थी कि एक भिखारी ने दयनीय स्वरों में याचना की– भोजन की! सम्राट द्वारा याचना को विनयपूर्वक अस्वीकार करते देख रानी ने कहा– राजन् यदि एक दिन और भूखा रह जायेंगे हम तो इस भूखे का पेट भर जायेगा..... दे दीजिये इसे भोजन!

कुछ दिनों की कठिन यात्रा के बाद राजा ने अत्यन्त चिन्तित होकर रानी से कहा ''अब आगे का जीवन कैसे चलेगा? रानी ने सुझाव दिया '' अपने कुछ पुण्य यहाँ के नरेश को बेचकर हम कुछ स्वर्ण मुद्राए लेकर सुखी जीवन जी सकते हैं! राजा को बात अच्छी लगी! सम्राट ने वहाँ के राजा के पास अपनी बात रखी, तो वे तैयार हो गये, पर यह क्या? सम्राट ज्यों–ज्यों पुण्य का लेखा तराजू में रखते पर पलड़ा हिलता तक नहीं! सभी ओर से घेरती निराशा के बीच रानी को भिखारी को दिया भोजन याद आया, तब लेखा पर्ची पलड़े में पड़ी तो दूसरी ओर सहस्त्र स्वर्ण मुद्राएँ आ गई– पलड़े में। सम्राट ने तुरन्त जान लिया कि वास्तव में पुरूषार्थ द्वारा अर्जित राशि का दान ही सार्थक है!

आदरणीय महानुभावों, आपश्री द्वारा भी जो कठोर परिश्रम द्वारा धन रूपी लक्ष्मी का दान नारायण सेवा संस्थान को दिया जा रहा है, वह ऐसा ही दान है। आप द्वारा दिए गये दान से पशुवत चलने वाले अपने पाँवो पर खड़े हो रहें हैं, जिनके माँ–बाप नहीं है ऐसे बच्चे सुसंस्कारी एवं विद्या दान अर्जित कर रहें हैं, बेसहारा एवं गरीब बहिनें स्वावलम्बन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है, वनवासी क्षेत्र के अभाव ग्रस्त दीन हीन बीमार औषधि प्राप्त कर रहें हैं– घर बैठे। सैकड़ों परिवार आजीवन व्यसन मुक्त होकर सभ्य एवं सुखी गृहस्थ जीवन जी रहें हैं।

आइए, हम भी प्रण लें कि जब तक कुछ भी देने की सामर्थ्य परमात्मा बनाये रखेगा तब तक किसी जरूरतमन्द को निराश नहीं लौटने देंगे!

नि:शुल्क उपहार केन्द्र का शुभारंभ

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में एक और निःशुल्क सेवा प्रकल्प निर्धनों व जरूरतमंदों के लिए आरंभ किया जाएगा। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थापक कैलाश मानव के निर्देश पर दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजन एवं विमंदितो की सेवा के लिए स्थापित इस नारायण उपहार केन्द्र से उन्हें निःशुल्क परिधान, किताबें, जूते एवं चप्पल आदि प्रदान किए जाएंगे। सेक्टर–3 की भैरवधाम कॉलोनी में स्थापित केन्द्र का उद्घाटन होगा।

करणी माता राजस्थान

राजस्थान भारत का एक ऐसा राज्य जो जितना खूबसूरत है उतना ही विचित्र भी। कहीं रेत के बड़े–बड़े अस्थायी पहाड़ हैं तो कहीं तालाब की सुंदरता। शौर्य और परंपरा की गाथाओं से सजती शाम जहाँ है तो वहीं आराधना का जलसा दिखते आठों पहर भी रेत की तरह ही फैले हैं। ऐसी ही तिलिस्मी दुनिया से दिखते इस मरूस्थल में आश्चर्य और कौतूहल का विषय लिए बसा देशनोक कस्बा।

सुनहरी रेत के बीच अपनी आभा लिए दमक रहा यह स्थान वैसे तो छोटा ही है पर इसकी महत्ता व ख्याति विदेश तक फैली हुई है। रेत के दामन में सुनहरे संगमरमर से गढ़ा एक मंदिर जिसकी नक्काशी यदि ऊपरी दिखावे से आकर्षित करने की बात को चरितार्थ करती है तो भीतर की अलौकिकता अच्छी सीरत का उदाहरण पेश करती है।

दैवीय शक्ति को समर्पित इस स्थान के कुछ रहस्य आज भी बरकरार हैं जो किसी के लिए श्रद्धा तो किसी के लिए खोज का विषय बने हुए हैं। लोग इस मंदिर में आते तो करणी माता के दर्शन के लिए हैं पर साथ ही नजरें खोजती हैं सफेद चूहे को। ''चूहे वाला मंदिर'' के नाम से भी

प्रसिद्ध यह मंदिर बीकानेर से कुछ ही दूरी पर देशनोक नामक स्थान पर बना हुआ है। आस्था व विज्ञान का तिलिस्मी तालमेल लिए अपने सीने में राज छुपाए बैठे इस मंदिर की यह पहली विशेषता है।

इस मंदिर में भक्तों से ज्यादा काले चूहे नजर आते हैं और इनकी खासी तादाद में अगर कहीं सफेद चूहा दिख जाए तो समझें कि मनोकामना पूरी हो जाएगी। यही यहाँ की मान्यता भी है। वैसे यहाँ चूहों को काबा कहा जाता है और इन काबाओं को बाकायदा दूध, लड्डू आदि भक्तों के द्वारा परोसा भी जाता है। असंख्य चूहों से पटे इस मंदिर से बाहर कदम रखते ही एक भी चूहा नजर नहीं आता और न ही मंदिर के भीतर कभी बिल्ली प्रवेश करती है। कहा तो यह भी जाता है कि जब प्लेग जैसी बीमारी ने अपना आतंक दिखाया था तब भी यह मंदिर ही नहीं बल्कि पूरा देशनोक इस बीमारी से सुरक्षित था।

बीकानेर से करीब 30 किमी दूर बने इस मंदिर को 15 वीं शताब्दी में राजपूत राजाओं ने बनवाया था। माना जाता है कि देवी दुर्गा ने राजस्थान में चारण जाति के परिवार में एक कन्या के रूप में जन्म लिया और फिर अपनी शक्तियों से सभी का हित करते हुए जोधपुर और बीकानेर पर शासन करने वाले राठौड़ राजाओं की आराध्य बनी। 1387 में जोधपुर के एक गाँव में जन्मी इस कन्या का नाम वैसे तो रिघुबाई था पर जनकल्याण के कार्यों के कारण करणी माता के नाम से इन्हें पूजा जाने लगा। और यह नाम इन्हें मात्र 6 साल की उम्र में ही उनके चमत्कारों व जनहित में किए कार्यों से प्रभावित होकर ग्रामीणों ने दिया था।

वैसे तो यहाँ साल भर श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है पर साल में दो बार यानी नवरात्रि में यहाँ विशेष मेला भी लगता है जिसमें देश भर के भक्त देवी दर्शन के लिए आते हैं। वैसे यह मंदिर करणी माता के अंतर्ध्यान होने के बाद बनवाया गया था। किंवदंती के अनुसार करणी माता के सौतेले पुत्र की कुएँ में गिरने से मृत्यु होने पर उन्होंने यमराज से बेटे को जीवित करने की माँग की। यमराज ने करणी माता के आग्रह पर उनके पुत्र को जीवित तो कर दिया पर चूहे के रूप में। तब से ही यह माना जाता है कि करणी माता के वंशज मृत्युपर्यंत चूहे बनकर जन्म लेते हैं और देशनोक के इस मंदिर में स्थान पाते हैं। इस शक्ति को राजस्थान ही नहीं बल्कि हर आस्थावान व्यक्ति नमन करता है।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /ke Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i"i½

❖ कर्म प्रधान जीवन ही सार्थक❖

एडिशनल कलक्टर थी। और मैं कई बार उनके साथ कथौड़िया परिवारों के बीच गया। एक लंगोटी कमीज नहीं सीने पर महिलाओं के फटी – टूटी धोती कत्था निकालने का एक छोटा सा खुरपे टाईप कत्था जहाँ तक मुझे स्मरण है वृक्ष के तनों पर होता है। जैसा आपने देखा होगा शिलाजीत भी शिला के ऊपर मिलता है। भगवान की कृपा से।

तो डॉ0 सा. से मिला में 15 तारीख को तो हम आये ही थे 16 तारीख को डॉ. पामेचा सा. को मैंने निवदेन किया, डॉ. सा. आपकी चिकित्सा से बहुत लाभ हो रहा है। करीबन 1000–1100 महानुभाव आयेंगे कत्थाफला में 250–300 तो हो सकता है रोगी लोग हो आप मुझे दवाई लिखा दीजिये। उन्होंने कहा कैलाश जी भाईसाहब बेन्जाइन की दो–तीन सीरप ले आओ और एक लम्बी लिस्ट दी। मैंने अनुमान लगाया मैंने कहा डॉ. साहब कितना रुपया लगेगा? कितने अंदाजन 700–800 रुपये लगेंगे मेरे पास तो रुपया दान का तो लगभग नहीं आता था। बहुत कम मैंने आपको शायद बताया होगा 60 रुपये लेके मेरे फोन इंस्पेक्टर सा. आये थे कि मैं आपको 60 रुपये जमा कराने आया हूँ। तो उस समय मेरे पास रसीद बुक छपाई नहीं थी। मैंने कहा साहब हमारे पास तो रसीद बुक नहीं हैं बोले ये तो अपनी संस्था है नारायण सेवा कैलाश जी रसीद की कहाँ जरूरत है? मैंने तो हनुमान जी के प्रसाद बोला था और हनुमान जी ने सपने में मुझे कहा बेटा नारायण सेवा में जमा कराके आ जाओं। ऐसी कृपा है। हनुमान जी की नारायण सेवा पर। हम उनकी आराधना ही कम कर पाते है। मैं हनुमानजी की उपासना ही कम कर पाता हूँ। पर हनुमान जी मन की जानते है। हनुमान जी का काम करते है। मैं कहा करता हूँ हनुमान चालिसा रोज पढ़ना चाहिए। पर मेरे मन में लगता हैं कैलाश तूं तो रोज नहीं पढ़ता। सुन्दरकाण्ड हर मंगलवार को करना चाहिए। कैलाश तूं तो हर मंगलवार को नहीं करता । इसलिए कहते कहते में झिझक जाता हूँ। फिर भी मैं अमृत नहीं पी पाया। मुझे लाभ नहीं मिला आप पी लीजिए।

तो हमारे पास रसीद बुक नहीं थी। फिर बाद में रसीद बुक छपाई। नारायण सेवा संस्थान नीचे एक दोहा लिखा।

भूखे को भोजन, बीमार को दवा।
गरीब को कपड़ ा, यही है नारायण सेवा।।

ज्यादा परिभाषा नहीं जानते हम! सेवा परमोधर्म क्या होता है? ये तो बाद में पढ़ा हमने श्लोक ये भी बाद में पढा।

जब व्यास जी भगवान से पूछा था। भगवान आपने अठारह पुराणों की रचना कर दी। पाराशर ऋषि जी के पुत्र व्यास जी भगवान। जो व्यास जी महाराज पाण्डव कुल में बहुत बड़े थे। महाभारत की कथाओं में आता है। धृतराष्ट्र अम्बिका जी के पुत्र पाण्डु अम्बालिका जी के पुत्र विदूर जी यमराज जी के अवतार थे। दासी पुत्र कहा जाता था। (विदूर नीति) तो मैं आपको 700–800 रुपये की बात कर रहा था। मन में आया कहाँ से पैसा आयेगा? बैंक खाता जहाँ मुझे याद है मेरा तो था ही नहीं, बाद में खुलवाया। बहुत ज्यादा अनुभव नहीं था। अब तो बहुत हो गया बैंको का इंटरनेट हो गया। घर बैठे कम्प्यूटर में देख लो कितना बैलेंस है?

एक – दो दिन पहले ही शिव नारायण जी का छः सौ रुपये का ड्राफ्ट आया था। मैंने कहा शिव नारायण जी अग्रवाल धन्यवाद है। धन्यवाद है शंकर लाल जी अग्रवाल सा. हमारे ताऊजी के सुपुत्र है। नीलकण्ठ पेपर स्टोर बाजार नं. 02 बैंक के रिटायर्ड अधिकारी अभिषेक के पिताजी। श्वेता जी के आदरणीय पापाजी। हमारी बिटिया अनुराधा के पिताजी। बहुत अच्छा शिव नारायण जी–धन्यवाद आपको। तो दवाई का काम तो शिवनारायण जी के रुपयों से हो गया। मन में था परसों ट्रक आने वाली है। मफत काका ने कहा था। मैं 300 बोरी ज्वार भेज दूँगा आपको धन्यवाद मफत काका। धन्यवाद दिवाली बहन मोहन लाल जी मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट । धन्यवाद कमला देवी जी मेरी मदद कर रही है। धन्यवाद प्रशांत बाबू। आभार हैं कल्पना जी देवी का इस समय तो प्रशांत भैया भी 43 साल का हुआ।

घर का वैद्य

रात्रि में सोते समय दो काली हरड़ के चूर्ण की फाकी लेकर गुनगुना पानी पी लें। इससे कब्ज व पेट के रोगों का निवारण होने के साथ सातों धातुएं पुष्ट होती है। शरीर निरोग व स्वस्थ बना रहता है।

प्रतिदिन दो चार सूखे अंजीर खाकर दूध पीना वृद्ध लोगों के लिए लाभदायक माना जाता है। शक्तिवर्धक होने के साथ साथ यह कब्जनाशक, पित्तनाशक, रक्तरोग निवारक है एवं वायु विकार भी मिटाता है।

गुठली सहित छुआरे 250 ग्राम, नारियल गोला 500 ग्राम तथा मिश्री 750 ग्राम लेकर इनके अलग–अलग छोटे–छोटे टुकड़े कर लें तथा मिलाकर रख दें। बच्चों को ना ते के रूप में खिलायें। दो–दो चम्मच मात्रा में देने से बच्चों का स्वास्थ्य बनेगा।

घुटनों के दर्द से पीड़ित व्यक्तियों को मैथीदाना का बारीक चूर्ण एक से दो चम्मच मात्रा में पानी के साथ प्रातःकाल सेवन करना लाभप्रद रहता है। मैथी का काढ़ा बनाकर भी पी सकते हैं। सवेरे खाली पेट अखरोट की पचास ग्राम गिरियां खाना भी अच्छा रहता है। इससे घुटने में चिकनाई (मज्जा) बढ़कर दर्द को समाप्त करती है। नारियल की गिरी नियमित रूप से खाने से भी दर्द मिटता है।

एक छोटा चम्मच त्रिफला चूर्ण शाम को एक गिलास पानी में भिगो दें, प्रातः गर्म करें एवं आधा शेष रहने पर छान लें। दो छोटे चम्मच शहद मिलाकर चाय की तरह पी जायें। लगातार प्रयोग से मोटापा मिटेगा।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़